लक्ष्मण का चरित्र चित्रण

लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार है—

(1) सौन्दर्य के आगार—लक्ष्मण का व्यक्तित्व अत्यन्त आकर्षक है। वे रघुकुल की शोभा बढ़ानेवाले तथा अपनी उपस्थिति से सर्वत्र छटा बिखेरनेवाले मनोहर राजकुमार हैं। शैशवकाल में वे ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो समुद्र-मन्थन से निकले एक रत्न हों। इस सन्दर्भ में कवि ने लिखा है—

"माता सुमित्रा को मिला था, एक लाल अमूल्य ही।"

लक्ष्मण के सौन्दर्य को सब देखते ही रह जाते हैं। वे जब बोलते हैं तो अत्यन्त मधुर तथा कर्णप्रिय संगीत कानों में घोल देते हैं। कवि ने उनके सौन्दर्य की प्रशंसा इस प्रकार की है—

थी बोल में सुन्दर सुधा, उर में दया का वास था।
था तेज में सूरज, हँसी में चाँद का उपहास था॥

लक्ष्मण सचमुच ही सौन्दर्य अथवा कान्ति के प्रतीक हैं। स्वयं मेघनाद भी उनके रूप पर विमोहित हो जाता है। वह उन्हें 'लावण्यधारी ब्रह्मचारी' कहकर उनके सौन्दर्य की प्रशंसा करता है।

(2) शीलवान्—लक्ष्मण का बाह्य शरीर जितना आकर्षक तथा सुन्दर है, उतना ही उनका अन्तःकरण सरल, शुद्ध तथा कोमल है। लक्ष्मण में उदारता, कोमलता तथा स्वाभाविकता के गुण विद्यमान हैं। वे अपने भाई राम के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं। राम की भी उन पर असीम कृपा रहती है। वे राम के भक्त, अनुचर एवं सखा हैं। उनके चरित्र में कृत्रिमता नहीं है। यदि उदारता का गुण उनमें है तो यह गुण उनकी प्रत्येक अवस्था में परिलक्षित होता है। मेघनाद को युद्धस्थल में देखकर लक्ष्मण के हृदय में जो दया या कोमलता का भाव उत्पन्न होता है, वह उनका जन्मजात गुण है।

(3) शक्ति के पुंज—लक्ष्मण शीलवान्, उदार, दयालु और आज्ञाकारी हैं, तथापि उनमें पराक्रम, शक्ति, साहस, उत्साह तथा वीरता की भावना भी कूट-कूटकर भरी हुई है। लक्ष्मण धीर, वीर तथा साहसी योद्धा हैं। युद्धक्षेत्र में शत्रु को ललकारने, भीषण युद्ध करने तथा विजय-पताका फहराने में उनके शौर्य को देखा जा सकता है। शौर्य तथा शक्ति का गुण भी लक्ष्मण को बाल्यकाल से ही प्राप्त हुआ है। लक्ष्मण अपने युद्ध-कौशल तथा वीरता को युद्धक्षेत्र में ही प्रदर्शित करते हैं। वे रणोन्मत्त होकर शत्रु को परास्त करने में ही अपना कर्त्तव्य मानते हैं। कवि ने लिखा भी है—

सौमित्र को घननाद का रव, अल्प भी न सहा गया।
निज शत्रु को देखे बिना, उनसे न तनिक रहा गया॥

युद्ध में शत्रु के मनोभावों को भली-भाँति पहचानने में लक्ष्मण अत्यन्त कुशल हैं। वे युद्ध में मेघनाद की गर्वोक्ति को सुनकर इस प्रकार कहते हैं—

सच है सुधामय भारती से, खल सुधरते हैं नहीं।
क्या क्षीर पीने पर फणी, विष त्याग देते हैं कहीं॥

लक्ष्मण के शौर्य तथा पराक्रम को देखकर स्वयं राम इस प्रकार कहते हैं—

"मैं जानता था मार सकते हो तुम्हीं घननाद को।"

(4) मानवीय गुणों के भण्डार—लक्ष्मण मानवीय गुणों के भण्डार हैं। कवि के शब्दों में—

निशदिन क्षमा में क्षिति बसी, गम्भीरता में सिन्धु था।
था वीरता में अद्रि, यश में खेलता शरदिन्दु था॥

वस्तुतः लक्ष्मण अनेक गुणों से विभूषित हैं। नायक होने के लिए आवश्यक सभी गुण उनमें पूर्णतया विद्यमान हैं।

मेघनाद का चरित्र चित्रण

उत्तर : श्री श्यामनारायण पाण्डेय विरचित '**तुमुल**' खण्डकाव्य में मेघनाद को प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया गया है। मेघनाद तेजस्वी, पराक्रमी तथा वीर योद्धा है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

(1) तेजस्वी व्यक्तित्व—मेघनाद तेजस्वी व्यक्तित्व का युवक है। उसके मुखमण्डल पर ऐसा ओज है, जो बड़े-बड़े वीरों को एकटक देखने के लिए विवश कर देता है। उसके तेजस्वी रूप को देखकर सभा में बैठे हुए अन्य वीरों की दशा का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

''जो वीर थे बैठे वहाँ वे, टक-टक लखने लगे।''

उन्नत ललाट, अतुलित पराक्रम, सिंह-गर्जना आदि गुण मेघनाद के व्यक्तित्व को अधिक तेजस्वी बनाते हैं। युद्धस्थल में स्वयं लक्ष्मण भी मेघनाद के ऊँचे मस्तक, विशाल नेत्र और केहरी जैसी कमर को देखकर क्षण भर के लिए विस्मित हो जाते हैं।

(2) अतुल पराक्रमी—मेघनाद के पराक्रम को राम, लक्ष्मण तथा अन्य वीर भी स्वीकार करते हैं। उसने युद्ध में इन्द्र को भी परास्त किया है। रावण को तो अपने पुत्र मेघनाद के पराक्रम पर अत्यधिक भरोसा है। मकराक्ष की मृत्यु का बदला लेने के लिए रावण केवल मेघनाद को उपयुक्त मानता है और कहता है—

हे तात, तेरी शक्तियों का अन्त है मिलता नहीं।
घमसान में भी पुत्र तेरा, बाल तक हिलता नहीं॥

युद्धक्षेत्र की ओर जाते हुए मेघनाद के पराक्रम के सम्मुख धरती काँप उठती है। वृक्ष अपने आप गिरने लगते हैं और बड़े-बड़े धैर्यशाली वीरों का कलेजा दहलने लगता है।

(3) परम उत्साही एवं दृढ़प्रतिज्ञ—मेघनाद के मन में मकराक्ष की मृत्यु का बदला लेने तथा लक्ष्मण से युद्ध करने के लिए उत्पन्न परम उत्साह एवं साहस को देखकर सम्पूर्ण पृथ्वी काँप उठती है। रावण भी अपने पुत्र के साहस को जानकर कहता है—

"मम सुत षडानन से नहीं है, युद्ध में डरता कभी।"

(4) पितृभक्त तथा विवेकी वीर—मेघनाद अपने पिता रावण के प्रति पूर्ण भक्ति रखता है। वह अपने पिता को चिन्तामग्न देखकर स्वयं भी व्याकुल हो जाता है। अपने पिता को धैर्य प्रदान करने के लिए वह गर्वोक्ति करता है। वह कहता है कि मैं सिंह के समान युद्ध में उठूँगा और संग्राम में विजयी बनकर रहूँगा। मेघनाद परिस्थिति को समझनेवाला विवेकी वीर है। लक्ष्मण द्वारा अपने व्यक्तित्व की प्रशंसा सुनकर भी वह अपने निश्चय से विचलित नहीं होता और युद्ध करने के लिए ही तत्पर रहता है। मेघनाद, लक्ष्मण से कहता है—

अतएव मानूँगा नहीं, सन्नद्ध अब हो जाइए।
हे वीरवर! मेरी विनय से, बद्ध अब हो जाइए॥

(5) आत्मविश्वासी तथा अभिमानी—मेघनाद को अपने पराक्रम, शौर्य तथा युद्ध-कौशल पर पूर्ण विश्वास है कि वह युद्ध में लक्ष्मण को परास्त करेगा और वह ऐसा करके दिखाता भी है। पिता के सम्मुख भी मेघनाद का यही आत्मविश्वास झलक उठता है। उसकी गर्वोक्तियों को सुनकर तो सब भयभीत हो जाते हैं। लक्ष्मण की बात को वह ध्यानपूर्वक सुनकर व्यंग्य भरी हँसी हँसता है। ऐसा करने में वह अपने आत्मविश्वास तथा अभिमान को प्रकट करता है। कवि ने इस भाव का चित्रण इस प्रकार किया है—

जो-जो कहा उसको उन्होंने, ध्यान से तो सुन लिया।
पर गर्व से घननाद ने, सौमित्रि को लख हँस दिया॥

(6) यज्ञनिष्ठ एवं शील-सम्पन्न—मेघनाद राक्षस वंश से सम्बन्धित है, फिर भी वह यज्ञ-अनुष्ठान आदि कर्मों को करनेवाला है। वह युद्ध से पूर्व यज्ञ

करता है। यज्ञ-वेदी पर लक्ष्मण के बाणों से घायल होने पर भी वह यज्ञ को अधूरा नहीं छोड़ता। वह क्षण भर में ही विभीषण द्वारा उत्साहित लक्ष्मण के आक्रमण के रहस्य को जान लेता है, फिर भी वह अपने शील स्वभाव के कारण लक्ष्मण के कृत्य की ओर संकेत करता हुआ कहता है—

सम्मुख समर में हारने पर, यह नया संग्राम है।
योद्धा न कर सकता कभी, इतना घृणास्पद काम है॥

इस प्रकार कवि ने मेघनाद के चरित्र और उसके वीर रूप को सर्वोत्कृष्ट सिद्ध किया है।